RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

यौगिक ग्रन्थों में वर्णित भक्तियोग की वर्तमान समय में उपादेयता : एक समीक्षात्मक अध्ययन

वंदना सिंघल, शोध छात्र, योग विभाग, एशियन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, इम्फाल, मणिपुर

सार
भक्ति, भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरा का एक अहम हिस्सा है, जो आत्मीयता, समर्पण और प्रेम के माध्यम से भगवान के प्रति आस्था व्यक्त करने की प्रक्रिया है। आधुनिक युग में भक्ति का रूप और महत्व दोनों में परिवर्तन आया है। आज के समाज में जब व्यक्ति भौतिकवाद और मानसिक तनाव से घिरा हुआ है, भक्ति उसे आंतरिक शांति, संतुलन और जीवन में एक उच्च उद्देश्य की ओर मार्गदर्शन प्रदान करती है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से भक्ति का प्रचार-प्रसार पहले से कहीं अधिक हो गया है, जिससे लोग समय और स्थान की सीमाओं को पार कर अपने आराध्य के साथ जुड़ सकते हैं। इसके अलावा, भक्ति गीत, भजन और मंत्रों का अभ्यास भी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार लाने के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार, आधुनिक समय में भक्ति न केवल एक धार्मिक क्रिया है, बल्कि यह मानसिक सुकून, समाज में नैतिकता और व्यक्तिगत आत्म-सुधार का एक प्रभावी साधन बन गई है।

परिचय
भक्ति शब्द से हम सभी भलीभांति परिचित हैं । भक्ति व योग संस्कृत के शब्द हैं ; योग का अर्थ है जुड़ना अथवा मिलन; और भक्ति का अर्थ है दिव्य प्रेम, ब्रह्म के साथ प्रेम, परम सत्ता से प्रेम। भक्ति वह नहीं जो हम करते हैं या जो हमारे पास है - अपितु वह जो हम हैं। और इसी की चेतना, इसी का ज्ञान ही भक्ति योग है। परम चेतना का अनुभव और उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं - मैं सबसे अलग हूँ - इस बात का विच्छेद, इसको भूल जाना ; संसार, जगत द्वारा दी हुई सभी पहचान का विस्मरण, उस परम चेतना, अंतहीन सर्वयापी प्रेम से मिलन, साक्षात्कार, प्रति क्षण अनुभव ही वास्तव में भक्ति योग है।
हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति काव्य को सर्वोच्य स्थान प्राप्त है। इस युग को सहित्य के इतिहास का स्वर्ण युग भी कहा गया है जिसने कबीर, रैदास, सूरदास, मीरा, जायसी, तुलसीदास जैसे महान् कवि हिंदी साहित्य को दिये । भक्ति साहित्य में केवल ईश्वर की आराधना, प्रार्थना और लीला गान ही नहीं है । भक्ति योग भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह योग के चार प्रमुख मार्गों (ज्ञान योग, कर्म योग, राज योग और भक्ति योग) में से एक है, जिसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण के माध्यम से आत्मिक उत्थान करना है। भक्ति योग का उल्लेख प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे भगवद गीता, श्रीमद्भागवत पुराण, और संत साहित्य में विस्तार से मिलता है। यह साधना का ऐसा मार्ग है जो व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ने के साथ-साथ उसके मन, शरीर और आत्मा को भी संतुलित करता है।
धर्म के क्षेत्र में तीन मार्ग बताएं गए हैं : भक्ति और कर्म ज्ञान का संबंध ईश्वर संबंधी तत्वचिंतन से है जबकि भक्ति का संबंध ईश्वर के प्रति निष्ठा और प्रेम द्वारा उसकी प्राप्ति से है। कर्म का संबंध उन आचारों विचारों से है, जिनका पालन करके व्यक्ति अपने को ईश्वर की प्राप्ति के योग्य बनाता है। ईश्वर की प्राप्ति का एक अन्य मार्ग योग भी बताया गया है जिनमें कठोर साधना और तपस्या पर बल दिया गया है।
भक्ति शब्द की निष्पत्ति "भज्" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है सेवा करना। लेकिन इसका अर्थ सिर्फ सेवा शब्द तक ही सीमित नहीं है । भक्ति में ईश्वर का भजन, पूजा, प्रीति और अर्पण भी शामिल है। दूसरे शब्दों में भक्ति ईश्वर के प्रति भक्त के प्रेम की अभिव्यक्ति है । नारद रचित भक्ति सूत्र में भक्ति की यही परिभाषा दी गई है ।

सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च

अर्थात वह भक्ति भगवान् के प्रति परम प्रेम रूपा है और अमृत स्वरूपा है । कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर के प्रति परम प्रेम और जिसका स्वरूप अमृत के समान हो उसे ही भक्ति कहा गया है।
शाण्डिल्य रचित भक्ति सूत्र के अनुसार "सा परानुरक्तिरीश्वरे" अर्थात ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति ही भक्ति है। इस प्रकार भक्ति वस्तुतः ईश्वर के प्रति गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति का ही दूसरा नाम है। ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम पर बल देने के कारण ही भक्ति ईश्वर प्राप्ति के अन्य मार्गों से भिन्न हो गई है। ज्ञान, कर्म ओर योग में प्रेम को केंद्रीय महत्व प्राप्त नहीं है। दूसरे, धर्म का जो कर्मकांडीय रूप है, उसको भी भक्ति में अस्वीकार किया गया है। नारद के "भक्ति सूत्र" में इसीलिए कहा गया है, "उस परम प्रेमरूपा और अमृत स्वरूपा भक्ति को प्राप्त करके मनुष्य सिद्ध हो जाता है, अमर हो जाता है और तृप्त हो जाती है । उस भक्ति को प्राप्त करने के बाद मनुष्य को न किसी भी वस्तु की इच्छा रहती है न वह शोक करता है, न वह द्वेष करता है, न किसी वस्तु में ही आसक्त होता है। उस प्रेमरूपा भक्ति को प्राप्त करके वह प्रेम में उन्मत हो जाता है । "
भक्ति पर लौकिक दृष्टि से विचार करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेम और श्रद्धा के योग को भक्ति कहा है। इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि "जब पूजा भाव की वृद्धि के साथ श्रद्धा-भाजन के सामीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिए जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि में आंनद का अनुभव होने लगं - जब उससे संबंध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिए।" (चिंतामणि, भाग 1)
वर्तमान शोध पत्र में दो दृष्टिकोण पर चर्चा की गई है अर्थात पहले, अनुयायियों में भक्ति योग भक्ति को आत्महत्या करने के लिए प्रयुक्त वीडियो का आलोचनात्मक विश्लेषण करना दूसरा, भक्ति योग विचारधारा की स्थापना के बाद उत्पन्न होने वाले निहित अर्थों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना । इनका अध्ययन करना बहुत ही रोचक है क्योंकि व्यावहारिक रूप से भक्तियोग शारीरिक और आध्यात्मिकसुख प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करता है । यानी ऐसा रास्ता अपनाना जो मुड़ता नहीं

है। धर्म की मंजिल तक तेजी से पहुंच सकता है यानी शारीरिक और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति है । भक्ति योग विचारधारा को समझने का प्रक्रिया (1) नव विधि भक्ति (2) आश्रम (3) पशुपालन (4) आध्यात्मिक गुरु साधु संघ के साथ संगति के माध्यम से की गई थी । अंतर निहित भक्ति योग विचारधारा के धार्मिक जीवन के लिए निहितार्थ है यानी जप माला और तिलक के उपयोग के विपरीत धार्मिक संप्रदाय की पहचान के प्रति का उपयोग सामाजिक संस्कृति के लिए निहित अर्थ भक्ति योग में भाग लेने से पहले और बाद में अनुयाई की संस्कृति की परस्पर क्रिया होती है धार्मिक संप्रदायों में और अनुयायियों की अर्थव्यवस्था के लिए निहितार्थ अनुयायियों के बीच पूंजी विनिमय और अनुयायियों और संगठनों पर पूंजी संचय है।

हिंदू धर्म अपने अनुयायियों की खुशी पाने के चार तरीका बताता है इन चार तरीकों का चतुर योग के नाम से जाना जाता है यानी कर्म योग कम या सेवा का तरीका भक्ति योग भक्ति अर्पण का तरीका ज्ञान योग ज्ञान या ईश्वर के सर को समझने का तरीका और ध्यान या समाधि के माध्यम से राजयोग ।भक्ति को आमतौर पर मंदिर जाने और पूजा करने से जोड़कर देखा जाता है, ऐसा तथाकथित भक्तों के बाहरी कामों को देखकर सोचा जाता है। भक्ति बुद्धि का ही एक दूसरा आयाम है। बुद्धि सत्य पर जीत हासिल करना चाहती है। भक्ति बस सत्य को गले लगाना चाहती है। भक्ति समझ नहीं सकती मगर अनुभव कर सकती है। बुद्धि समझ सकती है मगर कभी अनुभव नहीं कर सकती। अब व्यक्ति के पास चुनाव का यही विकल्प है। जब आप किसी चीज या किसी व्यक्ति से अभिभूत होते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से भक्त हो जाते हैं। लेकिन यदि आप भक्ति करने की कोशिश करते हैं, तो इससे समस्याएं पैदा होती हैं क्योंकि भक्ति और छल के बीच बहुत बारीक रेखा है।

भक्ति की कोशिश आपमें कई तरह के भ्रम पैदा कर सकती है। तो आप भक्ति का अभ्यास नहीं कर सकते, लेकिन आप कुछ ऐसी चीजें जरूर कर सकते हैं जो आपको भक्ति तक पहुंचा सकें, भक्त बना सकें। शुक्ल जी के मत से स्पष्ट है कि भक्ति में भक्त ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम ही अनुभव नहीं करता बल्कि उसके प्रति पूज्य भाव भी रखता है। उसे अपना उद्धारकर्त्ता, पालनहार और मार्गदर्शक भी मानता है ।

अगर आप सिर्फ एक चीज को समझ लें, बल्कि आत्मसात कर लें तो आप स्वाभाविक रूप से एक भक्त बन जाएंगे। यह ब्रह्मांड काफी विशाल है। आपको नहीं पता कि वह कहां से शुरू होता है और कहां खत्म होता है। अरबों-खरबों तारामंडल हैं।सौर मंडल के इस छोटे से कण में हमारी पृथ्वी एक सूक्ष्म कण है। पृथ्वी के इस सूक्ष्म कण में आपका शहर, जिसमें आप रहते हैं, वह और भी नन्हा सा, अति सूक्ष्म कण है। उस शहर में, आप एक 'बड़े आदमी' हैं! इस व्यापक ब्रह्मांड में, यह सौर मंडल एक छोटा सा कण है। अगर यह सौर मंडल कल गायब हो जाए, तो ब्रह्मांड में इस पर ध्यान भी नहीं जाएगा। सौर मंडल के इस छोटे से कण में हमारी पृथ्वी एक सूक्ष्म कण है।

पृथ्वी के इस सूक्ष्म कण में आपका शहर, जिसमें आप रहते हैं, वह और भी नन्हा सा, अति सूक्ष्म कण है। उस शहर में, आप एक 'बड़े आदमी' हैं! खुद को बड़ा, खास या महत्वपूर्ण समझना - यह नजरिये की एक गंभीर समस्या है। सिर्फ इसी वजह से आपके अंदर कोई भक्ति नहीं है। रात में बाहर निकलिए, बत्तियों को बुझा दीजिए और आसमान की ओर देखिए। आपको नहीं पता कि वह कहां शुरू होता है और कहां खत्म होता है। यहां आप धूल का एक अति सूक्ष्म कण हैं जो एक ग्रह पर घूम रहा है। आपको नहीं पता कि आप कहां से आए हैं या कहां जाएंगे। जब आप इस बात को आत्मसात कर लेंगे फि र आपके लिए भक्त बनना बहुत स्वाभाविक होगा। आप उस हर चीज के आगे झुकेंगे, जिसे आप देखते हैं। अगर आप बस बाकी सृष्टि के संदर्भ में अपनी ओर देखें, तो कोई और तरीका नहीं है।

लोग अहंकारी मूर्ख सिर्फ इसलिए बन गए हैं क्योंकि वे इस बात का नजरिया खो बैठे हैं कि वे कौन हैं और अस्तित्व में उनकी क्या बिसात है? आप एक सरल चीज यह कर सकते हैं कि इस अस्तित्व में हर चीज को खुद से ऊंचा समझें। सितारे तो निश्चित रूप से ऊंचे ही हैं मगर सडक़ पर पड़े छोटे से कंकड़ को भी खुद से ऊंचा देखने की कोशिश करें। वैसे भी, वह आपसे अधिक स्थायी, आपसे अधिक स्थिर है। वह सदियों तक शांत होकर बैठ सकता है। अगर आप अपने आस-पास की हर चीज को खुद से ऊंचा मानना सीख लें, तो आप कुदरती तौर पर भक्त बन जाएंगे। एक भक्त ऐसी चीजों के बारे में जानता है, जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

वह ऐसी चीजें समझ सकता है, जिन्हें समझने में आपको मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि उसके भीतर 'मैं' नहीं होता। जब आप खुद से बहुत ज्यादा भरे हुए होते हैं, तो कुछ बड़ा घटित होने की गुंजाइश नहीं होती। भक्ति का मतलब यह नहीं है कि आपको मंदिर जाना होगा, पूजा करनी होगी, नारियल तोडऩा होगा। एक भक्त यह समझ लेता है कि अस्तित्व में उसकी जगह क्या है। अगर आपने इसे समझ लिया है और इसे लेकर सचेतन हैं तो आप एक भक्त की तरह व्यवहार करेंगे। फि र आप किसी दूसरे तरीके से रह ही नहीं सकते। यह अस्तित्व में रहने का एक समझदारी भरा तरीका है।

निष्कर्ष

आज के समय में भक्ति का महत्व और उपयोग एक विशेष स्थान रखता है। भागदौड़ भरी ज़िंदगी, तनाव और अनिश्चितताओं के बीच, भक्ति एक ऐसा साधन है जो मनुष्य को आत्मिक शांति, मानसिक स्थिरता और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। भक्ति केवल किसी विशेष धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हर व्यक्ति के भीतर समर्पण, प्रेम और आस्था को जागृत करने का माध्यम है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति अपने अहंकार को छोड़कर ईश्वर, ब्रह्मांड, या किसी उच्चतर शक्ति से जुड़ता है। यह जुड़ाव न केवल आत्मिक उन्नति लाता है, बल्कि मानवीय मूल्यों जैसे करुणा, सहनशीलता और दया को भी बढ़ावा देता है। वर्तमान समय में भक्ति का उपयोग ध्यान, योग, प्रार्थना, या किसी अन्य आध्यात्मिक साधना के रूप में किया जा सकता है, जो न केवल व्यक्ति को आंतरिक शांति देता है, बल्कि समाज में सकारात्मकता और सद्भावना को भी प्रोत्साहित करता है। इसलिए,

भक्ति आधुनिक जीवन में तनाव मुक्त और संतुलित जीवन जीने का एक प्रभावशाली माध्यम है। यह न केवल आत्मिक उन्नति में सहायक है, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन को भी समृद्ध बनाता है।

संदर्भ सूची

1. श्रीमद्भगवद्गीता -विशेष रूप से 12वां अध्याय (भक्ति योग)
2. भागवत पुराण-भक्ति के विभिन्न रूप और भक्तों की कथाएँ
3. नारद भक्ति सूत्र- भक्ति के सिद्धांत और साधन
4. रामचरितमानस (तुलसीदास)-भक्ति और रामभक्त हनुमान के उदाहरण
5. योग वशिष्ठ- भक्ति और ज्ञान का संतुलन
6. संत कबीरदास- साखी और पदावली में भक्ति के सरल और गहरे पहलू
7. मीराबाई की रचनाएँ-प्रभु प्रेम और समर्पण
8. संत तुलसीदास- राम भक्ति की महिमा
9. चैतन्य महाप्रभु-कृष्ण भक्ति पर आधारित उनके उपदेश और कीर्तन
10. पॉडकास्ट/वीडियो: सद्‌गुरु, श्री श्री रविशंकर, और अन्य योग गुरुओं के भक्ति पर प्रवचन
11. www.bhagavad-gita.org
12. www.sivanandaonline.org
13. भक्ति योग सागर' स्वामी सत्यानंद सरस्वती के साथ सत्संग
14. नारद, (2010)। स्वामी भूतेशानंद द्वारा अनुवादित, नारद भक्ति सूत्र, वेदांत प्रेस -(अद्वैत आश्रम)
15. स्वामी विवेकानन्द (1978)। भक्ति-योग: प्रेम और भक्ति का योग, वेदांत प्रेस और किताब की दुकान

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...